श्री कृष्णः शरणं मम

कृष्णकर्णामृतम्

(संविमलाख्यव्याख्या)

सम्पादकः—

श्रीगोपालशास्त्री, दर्शनकेशरी

मूल्यम् आणकाष्टकम् ॥)

Presented to Shri Kalav Jeewan to go through the book. Bandi

❀ श्रीकृष्णः शरणं मम ❀

पाणिनिमुनिप्रवर्तितो व्याकरणाध्ययनप्रकारः ।

ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं बालानां सुखबोधिनीम् ।
आविष्करोमि लुप्तां तां पाणिनीयर्जुपद्धतिम् ॥ १ ॥
समुद्रवद् व्याकरणं महेश्वरे तदर्द्धकुम्भोद्धरणं बृहस्पतौ ।
तद्भागभागाच्च शतं पुरन्दरे कुशाग्रबिन्दूत्पतितं हि पाणिनौ ॥ २ ॥
ज्ञात्वाक्षरसमाम्नायं पदयोः क्रममेव च ।
विभक्त्यर्थं समासं च सन्धिलिङ्गोपसर्गकम् ॥ ३ ॥
पूर्वाभ्यस्तानि (कण्ठीकृतानि) सूत्राणि नित्यं विंशति-संख्यया ।
सार्थानि संविधेयानि वृत्तिनिर्माणतः स्वयम् ॥ ४ ॥
पाणिनीयप्रबोधेन लक्ष्यसिद्धिं ततोऽभ्यसेत् ।
एवं षण्मासमात्रेण बालाः संस्कृतवेदिनः ॥ ५ ॥
वयस्कास्तु मनोयोगात्सार्द्धमासादिकेन वै ।
संस्कृतं लेखितुं वक्तुं श्रीरामायणभारतम् ॥ ६ ॥
पठितुं प्रभवन्तीति प्रत्यक्षे किं प्रमाणतः ।
पाणिनीयमुनेरेषा पद्धतिः सरलोद्धृता ॥ ७ ॥
शीघ्रं संस्कृतभाषायाः (समुन्नेत्री समन्ततः) समन्तात् सम्प्रचारिका ।
संस्कृता कठिना भाषेत्यस्य भावस्य लोपिका ॥ ८ ॥
ऊर्ध्वबाहु प्रतिज्ञेयं कृता गोपालशास्त्रिणा ।
षाण्मासिकीं यां विश्वात्माऽवश्यं सफलयिष्यति ॥ ९ ॥

संस्कृत वाङ्मय महार्णवके मन्थनकर्ता विद्वानोंको यह भली भांति विदित है कि, पाणिनि महर्षिने वैदिक और लौकिक दोनों प्रकारके शब्दोंकी सिद्धिका उपाय अष्टाध्यायी-सूत्रसंग्रह बड़े ही सरल तथा संक्षिप्तरूपमें वैज्ञानिक विधिसे क्रमवार बताया है। जिसके द्वारा सोलह सत्रह वर्षकी अवस्थाके भीतरके बालक अनायास हसते हसते संस्कृत व्याकरणके व्यावहारिक ज्ञाता होजाते थे। उसके बाद सात आठ वर्षमें विषयान्तरके भी यथार्थ (प्रौढ) विद्वान् होजाते

थे। यों २४ चौबीस वर्षकी आयुतक संस्कृत वाङ्मय महार्णवके पारङ्गत विद्वान् होकर गुरुकुलसे स्नातक रूपमें निकलते थे। इसके अनन्तर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करते थे। इस पद्धतिको कालिदासने अपने रघुवंश काव्यमें स्पष्ट रूपसे दिखाया है।—महर्षि वरतन्तुका शिष्य कौत्स ऋषि जब गुरुकुलसे निकलकर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करता है तो वह चौदहो विद्याओंका अध्ययन कर चुकता है। यह वह स्वयं राजा रघुके समक्ष वर्णन करता है। (रघुवंशकाव्य ५ वाँ सर्ग श्लोक २०–२१)–

समाप्त-विद्येन मया महर्षिर्विज्ञापितोऽभूद् गुरुदक्षिणायै।
स मे चिरायास्खलितोपचारां तां भक्तिमेवागणयत्पुरस्तात् ॥
निर्बन्धसञ्जातरुषार्थकार्श्यमचिन्तयित्वा गुरुणाहमुक्तः।
वित्तस्य विद्यापरिसंख्यया मे कोटीश्चतस्रो दश चाहरेति ॥

अर्थ–मैं जब गुरुकुलमें १४ चौदहो विद्याओंके समाप्तिके बाद विद्याव्रतोभय-स्नातक होकर गृहस्थाश्रममें प्रवेशके लिये निकलने लगा तो गुरुजीसे गुरुदक्षिणा लेनेका अनुरोध किया। पहले तो उन्होंने मेरी गुरुभक्तिकी प्रशंसा कर गुरुदक्षिणा लेना अस्वीकार कर दिया। अनन्तर बहुत हठ करने पर क्रुद्ध होकर उन्होंने कहा कि तुमने मुझसे १४ चौदह विद्याएँ पढ़ी हैं, अतः चौदह करोड़ सुवर्ण मुद्रा इसका मूल्य होताहै, इतनी गुरुदक्षिणा ले आवो। कौत्सने भी १४ चौदह करोड़-सुवर्णमुद्रा गुरुदक्षिणामें गुरुजीको दी। यह विषय रघुवंशमें विशदरूपसे वर्णित है, अस्तु।

आज इस पद्धतिका बिलकुल उच्छेद है। न गुरुकुलप्रणाली है। न अष्टाध्यायी-सूत्रसंग्रह द्वारा संस्कृत व्याकरणका अध्ययन है। इसी कारण संस्कृत साहित्य का अध्ययन आज बड़ा ही कठिन हो गया है। मध्यकालीन पद्धतिसे लघुकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी पढ़नेमें ही बालकोंका १२ बारह वर्षका समय व्यतीत हो जाता है। फिर भी वे 'पद'–ज्ञानसे शून्यही रहते हैं।

आजकी संस्कृत व्याकरण पढ़ाईके अनिवार्य्य उक्त दोषोंको देखकर ही मैंने २५ वर्षके परिश्रमसे पाणिनिमुनिके प्राचीन क्रमको अतिसंक्षिप्तरूपमें विद्यार्थियोंके समक्ष उपस्थित किया है—

जिसका प्रकार यह है कि, पहले अक्षरसमाम्नाय सूत्रोंका ज्ञानकर संस्कृतके सुबन्त, तिङन्त दोनों पदोंका संक्षिप्त ज्ञान करले। इसके बाद विभक्तियोंके अर्थोंके साथ संक्षिप्त रूपसे छओ समासोंको जानले। अनन्तर सन्धि, लिङ्ग और उपसर्ग-निपातकी जानकारी करके प्रतिदिन बीस बीस संख्यामें कण्ठस्थ किये हुए ऋजु पाणिनीय (संक्षिप्ताष्टाध्यायी) के ११८७ सूत्रोंका अर्थ पूर्वसूत्रोंके पदोंकी अनुवृत्तिकी सहायतासे अपने आप करता जाय। यह कार्य बालक बालिकाओंसे तीन महिनेमें कराया जासकता है। वयस्कोंके लिये कोई निश्चित समय नहीं है। उनके मनोयोगकी बात है। वे जितने दिनोंमें कर सकें। वे तो सूत्रोंको बिना कण्ठस्थ कियेही उनका अर्थ ज्ञान कर सकते हैं। उनके लिये सब प्रकारकी सुविधायें हैं। अस्तु-जब सूत्रार्थका ज्ञान हो जाय, तब बालकोंको या बालिकाओंको पाणिनीय प्रबोध द्वारा प्रयोगोंकी सिद्धि करानी चाहिये। उस समय अधिकतर बालक बालिकाओंको स्वयं प्रयोग साधना चाहिये। अध्यापकको केवल उनकी सहायता करनी चाहिये। नकि लघुकौमुदीके समान अध्यापक स्वयं छात्रोंको पढ़ाते चलें और वे हां हां करते हुए सुनते चलें। इस पद्धतिमें सूत्रोंका अर्थ जाननेके लिये उनकी वृत्ति रटनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। लघुकौमुदी परसे तो अष्टाध्यायीके सूत्रक्रमसे छात्र पढ़ ही नहीं सकता क्योंकि लघुकौमुदीमें व्युत्क्रमसे सूत्रोंका उपन्यास है और छात्रोंके सामने पहले पहल वही पुस्तक रखदी जाती है संस्कृत पढ़नेके लिये। इसके अतिरिक्त भी लघुकौमुदी द्वारा आजकलकी संस्कृत पढ़ाईमें बहुतसे अनिवार्य्य दोष हैं, जिनका वर्णन करना मेरा विषय नहीं है। और यहां न स्थान है, न समय है।

अध्यापक महाशयको उचित है कि पाणिनीय प्रबोधको बालक बालिकाओंके लिये तीन महीनेमें समाप्त करदें। इस प्रकारसे यदि संस्कृत व्याकरण पढ़ा-पढ़ाया जाय तो छ मासमें ही संस्कृत बोलने लिखने आजायगी तथा वह व्यक्ति स्वयं संस्कृत रामायण और महाभारत का अर्थ कर सकेगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है। मैंने पाणिनीय महर्षिकी जो प्राचीन पद्धति थी उसीको सबके समक्ष संक्षिप्तरूपमें रखा है। जिससे संस्कृत भाषाका शीघ्र विश्वमात्रमें प्रचार होजाय और 'संस्कृत पढ़ना बड़ा कठिन है।' यह प्रवाद अब दूर होजाय। यही मेरी विश्वात्मासे प्रार्थना है। अब मैं संक्षेपसे (१) अक्षर वेदके सूत्र, (२) पदज्ञान, (३) विभक्त्यर्थ, (४) समास, (५) सन्धि, (६) लिङ्ग और (७) उपसर्ग-निपातज्ञानका क्रमशः उपाय बताता हूं

[१] अक्षरविज्ञानसूत्र—

[१] अइउण् [२] ऋलृक् [३] एओङ् [४] ऐऔच् [५] हयवरट् [६] लण् [७] ञमङणनम् [८] झभञ् [९] घढधष् [१०] जबगडदश् [११] खफछठथचटतव् [१२] कपय् [१३] शषसर् [१४] हल्।

ये चौदह माहेश्वर सूत्र कहाते हैं। इन्हें पाणिनिमुनिने शिवजीकी कृपासे डमरूवाद्यके द्वारा प्राप्त किया है। इनसे प्रत्याहारका ज्ञान किया जाता है। जैसे—'अण्' कहनेसे 'अइउ' इन तीन अक्षरोंका ज्ञान होता है। क्योंकि—प्रत्याहारका अर्थ है, अपनेमें मिला ले जैसे 'अण्' इन दो अक्षरोंने प्रथम 'अ' के साथ 'इ उ' को भी अपनेमें मिला लिया तो 'अण्' दो अक्षर कहनेसे 'अ इ उ' इन तीन अक्षरोंका बोध हो जाता है। चौथा 'ण्' का बोध नहीं होता है क्योंकि वह हल् अक्षर है। (जिसमे कोई स्वर न हो उसे हल् (व्यञ्जन) अक्षर कहते हैं) बिना स्वरके व्यञ्जन अक्षर तो बोले ही नहीं जा सकते। ऊपरके १४ चौदह सूत्रोंके अन्तमें विना स्वरके जितने व्यञ्जन (हल् अक्षर) हैं, उनको इन सूत्रोंके किसी भी स्वर या स्वर सहित व्यञ्जनके साथ बोलकर प्रत्याहारोंका नाम तो बना लेते हैं पर प्रत्याहारोंके अक्षरोंमें इनकी गणना नहीं करते। ऐसी ही पाणिनि मुनिकी आज्ञा है। इसी कारण 'अइउ' इन तीन अक्षरोंको ही 'अण्' प्रत्याहारमे माना हैं 'ण्' को नहीं। यों ही 'अक्' प्रत्याहारमे 'अइउऋऌ' इन पाँच अक्षरों को ही मानेंगे 'ण्' और 'क्' को नही। इसी प्रकारसे आगेके सभी प्रत्याहारोंको समझना चाहिये। जैसे—'अच्' प्रत्याहारसे 'अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ' ये नव ९ अक्षर लिये जाते हैं। ऐसे ही सभी प्रत्याहारोंको समझना चाहिये। पाणिनिमहर्षिने कुल ४४ चौवालीस प्रत्याहारोंसे अपने सूत्रोंमें काम लिया है। इन वर्ण-समाम्नाय सूत्रोंमें ९ नव तो 'अच्' स्वर हैं। ३३ तैंतीस 'हल्' व्यञ्जन हैं, यों कुल ४२ बेआलीस अक्षर हैं।

हिन्दीमे जैसी अक्षर लिखनेकी परिपाटी है वैसी पाणिनिजीकी नहीं है। पर दोनो परिपाटियाँ जाननी चाहियें। हिन्दीमें स्वरके बाद वर्ण

लिखे जाते हैं। वे पाँच हैं। कु चु टु तु पु। एक वर्ग में ५ पाँच अक्षर होते हैं। कु=कवर्ग, क ख ग घ ङ। चु=चवर्ग, च छ ज झ ञ। टु=टवर्ग, ट ठ ड ढ ण। तु=तवर्ग, त थ द ध न। पु=पवर्ग, प फ ब भ म। पाचों वर्गोंके २५ अक्षरहैं। यवरल अन्तस्थ हैं। शषसह ऊष्मा हैं। इन ४२ बेआलीसों अक्षरोंके बोलनेका मुखमें स्थान भी पांच ही है। कण्ठ, तालु ओष्ठ मूर्धा और दाँत। इन्हीं स्थानोंसे ये कुल ४२ अक्षर बोले जातेहैं। इनके स्थान जाननेका सरल उपाय यह है कि एक अक्षर स्वरका, एक वर्ग, एक अन्तस्थका और एक ऊष्माका अक्षर लेकर अपने मुंहके उक्त पाचों स्थानोंसे बोलकर देखना चाहिये कि, किस स्थानसे कौन कौन अक्षर बोले जातेहैं। अ कु ह और विसर्ग कण्ठसे बोले जारहेहैं, बोलकर समझलें। इ चु य और श तालुसे बोले जातेहैं। बोल बोलकर समझते चलें। उ पु व और उपध्मानीय ओंठसे। ऋ टु र और ष मूर्धासे। लृ तु ल और स दाँतसे। अ+इ=ए, इसलिये 'ए' कण्ठतालु अ+उ=ओ, इस कारण 'ओ' कण्ठ ओठसे। अ+ए='ऐ' इसीसे ऐ भी कण्ठतालुसे। अ+ओ=औ इसी कारण 'औ' भी कण्ठ ओठसे। व ओठसे तो बोलाही जाता है पर इसके उच्चारणमें दाँत ओठ पर चढ़ जाता है। अर्थात् दाँत ओठ दोनोंसे बोला जाता है। इसीसे ब व ये दो भिन्न अक्षर हैं। बन्धु, बाहर, बाँध यहाँ ब ओठसे बोला जाता है। विहार, व्याधि, विश्व यहाँ व दाँतसे ओठको दबाकर बोला जाता है। यों अक्षरोंका स्थान ज्ञान करके प्रयत्नज्ञान करना चाहिये। प्रयत्न भी दो हैं—एक बाह्य एक आभ्यन्तर उनमें बाह्य ११ एगारह हैं। घोष अघोष, संवार विवार नाद श्वास, अल्पप्राण महाप्राण, उदात्त अनुदात्त स्वरित।

इन प्रयत्नोंमें कुछ एक दूसरेके विरोधी हैं, जैसे—घोषका विरोधी अघोष। संवारका विवार। नादका श्वास। अल्पप्राणका महाप्राण। घोष संवार नाद, ये परस्पर मित्र हैं। योंही अघोष, विवार, श्वास ये मित्र हैं। अच्=स्वरका तो उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ये तीनों प्रयत्न हैं। यह तो पाणिनिमुनिके सूत्रोंसे ज्ञात होता है कि किस पदमें कौन स्वर उदात्त है? कौन अनुदात्त है? और कौन स्वरित है? पर व्यञ्जनोंका तो बाह्य प्रयत्न बँधा हुआ है। वर्गोंका पहला दूसरा अक्षर और ऊष्मा

के तीनों तालव्य मूर्धन्य और दन्त्य श ष स अक्षर ये १३ खर् प्रत्याहारके अक्षर अघोष, विवार, श्वास हैं। वर्गके तीसरा चौथा पाँचवा अक्षर और अन्तःस्थ य व र ल तथा ऊष्माका ह ये २० हश् प्रत्याहारके अक्षर घोष, संवार, नाद हैं।

दूसरे आभ्यन्तर ५ पाँच हैं:—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत ईषद्विवृत और संवृत। सभी वर्गों के २५ अक्षर (जय्) स्पृष्ट हैं। इसीकारण इनको स्पर्श भी कहते हैं। अन्तस्थ (यण्) ईषत्स्पृष्ट हैं। स्वर (अच्) विवृत हैं। ऊष्मा (शल्) ईषद्विवृत हैं। केवल 'अ' संवृत है। बाह्य प्रयत्न हल् सन्धिमें काम देते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न अक्षरोंके सवर्णज्ञानमें काम देते हैं।

(२) पदज्ञान—

सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१८। जिनके अन्तमे सुप् और तिङ् होते हैं। वेही संस्कृतमें पद कहे जाते हैं। उन्हींका वाक्यमें प्रयोग होता है। इसलिये संस्कृतमें पद बनाना भी आवश्यक है। शब्दोंके आगे सुप् जोड़कर सुबन्त पद बनते हैं। धातुओंके आगे तिङ् जोड़कर, तिङन्त पद बनते है।

'सु' से लेकर 'प्' तक इक्कीस सुप् विभक्तियां है।

				इनका परिष्कृतरूप		
सु	औ,	जस्	प्रथमा		सू औ अः	१
अम्	औट्	शस्	द्वितीया	,,	अम् औ अः	२
टा	भ्याम्	भिस्	तृतीया	,,	आ भ्याम् भिः	३
ङे	भ्याम्	भ्यस्	चतुर्थी		ए भ्याम् भ्यः	४
ङसि	भ्याम्	भ्यस्	पञ्चमी		अः भ्याम् भ्यः	५
ङस्	ओस्	आम्	षष्ठी		अः ओः आम्	६
ङि	ओस्	सुप्	सप्तमी		इ ओः सु	७
सु	औ	जस्	सम्बोधन		सु औ अः	१

हलन्त शब्दोंमें प्रथमा विभक्तिके एक वचन वाली 'सु' लुप्त हो जाती है। केवल शब्द मात्र ही (अन्तिम अक्षर अपने वर्गका पहला और तीसरा अक्षर विकल्पसे होता है) पद बन जाता है। अन्य सभी विभक्तियोंमें शब्दका अन्तिम अक्षर मिला दिया जाता है। जैसे—

मरुत् + सु × = मरुत्, मरुद्	प्रथमा	एकवचन
मरुत् + औ = मरुतौ		द्विवचन
मरुत् + अः = मरुतः		बहुवचन
मरुत् + अम् = मरुतम्	द्वितीया	एक०
मरुत् + औ = मरुतौ		द्वि०
मरुत् + अः = मरुतः		बहु०
मरुत् + आ = मरुता	तृतीया	एक०
मरुत् + भ्याम् = मरुद्भ्याम्*		द्वि०
भरुत् + भिः = मरुद्भिः		बहु०
मरुत् + ए = मरुते	चतुर्थी	एक व०
मरुत् + भ्याम् = मरुद्भ्याम्		द्वि व०
मरुत् + भ्यः = मरुद्भ्यः		बहु व०
मरुत् + अः = मरुतः	पञ्चमी	एक व०
मरुत् + भ्याम् = मरुद्भ्याम्		द्वि व०
मरुत् + भ्यः = मरुद्भ्यः		बहु व०
मरुत् + अः = मरुतः	षष्ठी	एक व०
मरुत् + ओः = मरुतोः		द्वि व०
मरुत् + आम् = मरुताम्		बहु व०
मरुत् + इ = मरुति	सप्तमी	एक व०
मरुत् + ओः = मरुतोः		द्वि व०
मरुत् + सु = मरुत्सु		बहु व०

* जिन विभक्तियोंमें घोष अक्षर पहले (आदिमें) है उनमें मिलते समय शब्दका अघोष अक्षर अपने ही वर्गका घोष (अल्पप्राण) होकर मिलता है। इसके लिये (झलां जशोऽन्ते ८।४।३९ सूत्र है)

हे मरुत् + सु हे मरुत्, हे मरुद्	सम्बोधन	एक व०
हे मरुत् + औ हे मरुतौ		द्वि व०
हे मरुत् + अः हे मरुतः		बहु व०

इसी प्रकार हलन्त शब्दोंके विभक्तियोंमें मूल शब्दको जोड़कर पद बना लेना चाहिये।

जैसे—

शरत् + सु × = शरत्	प्रथमा	एक व०
शरद् + औ = शरदौ		द्वि व०
शरद् + अः = शरदः		बहु व०
शरद् + अम् = शरदम्	द्वितीया	एक व०
शरद् + औ = शरदौ		द्वि व०
शरद् + अः = शरदः		बहु व०
शरद् + आ = शरदा	तृतीया	एक व०
शरद् + भ्याम् = शरद्भ्याम्		द्वि व०
शरद् + भिः = शरद्भिः		बहु व०
शरद् + ए = शरदे	चतुर्थी	एक व०
शरद् + भ्याम् = शरद्भ्याम्		द्वि व०
शरद् + भ्यः = शरद्भ्यः		बहु व०
शरद् + अः = शरदः	पञ्चमी	एक व०
शरद् + भ्याम् + शरद्भ्याम्		द्वि व०
शरद् + भ्यः = शरद्भ्यः		बहु व०
शरद् + अः = शरदः	षष्ठी	एक व०
शरद् + ओः = शरदोः		द्वि व०
शरद् + आम् = शरदाम्		बहु व०

शरद् + इ = शरदि	सप्तमी	एक व०
शरद् + ओः = शरदोः		द्वि व०
शरद् + सु = शरत्सु *		बहु व०
हे शरद् + सु	सम्बोधन	एक व०
हे शरद् + औ		द्वि व०
हे शरद् + अः		बहु व०

ऐसे ही वाच् (वाक्-वाग्) भिषज् (भिषक् (ग्) प्राच्छ् (प्राट्-प्राड्) वेतनभुज् (वेतनभुक्-ग्) विश्वसृज् (विश्वसृट्-ड्) रुच् (रुक् ग्) ऋत्विज् (ऋत्विक्) (ग्) पयोमुच् (पयोमुक् ग्) सरित् (द्) हरित् (द्) क्षुध् (क्षुत्-द्) समिध् (समित्-द्) ककुभ् (ककुप्-ब्) दिश् (दिक्-ग्) तादृश् (तादृक्-ग्) इत्यादि हलन्त शब्दों के पदभी ऐसे ही विभक्तियोंमें जोड़ कर बना लेने चाहिये। पर यह ध्यान रहे कि चवर्ग अन्त वाले शब्दोंका पद हलादि विभक्तियों में कवर्ग अन्त वाला हो जायेगा। पर कुछ चवर्गान्त और शकारान्त शब्दोंका तथा ष् अन्तवाले शब्दोंका तो हलादि विभक्तियोंमें ट वर्गान्त रूप होता है और अजादि विभक्तियोंमें सभी शब्दोंके अन्तके हलन्त मूल अक्षर ही आगेके अक्षरोंमें मिल जाते हैं। इन कार्य्योंके सूत्र चोः कुः ८।२।३० और व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज भ्राज-छशां षः ८।२।३६ येहैं।

प्रथमा विभक्तिके सु में पहला और तीसरा दोनों अक्षर होते हैं। उसके लिये सूत्र है वावसाने। जैसे—वाक्, वाग्, मरुत्-मरुद्, शरत्-शरद्, इत्यादि।

अजन्त शब्दोंको विभक्तियोंके साथ जोड़नेमें कुछ अधिक मात्रामें विभक्तियों और शब्दोंको तोड़ना फोड़ना पड़ता है। इसलिए उनको यहाँ छोड़ दिया जाता है। केवल कुछ पद दिखा दिये जाते हैं, जैसे—अकारान्तपुंलिङ्ग-

---

* जिस हलादि विभक्तिमें अघोष अक्षर होते हैं उस विभक्तिमें मिलते समय शब्दका घोष अक्षर भी अपने मेलका (अल्पप्राण) अघोष होते हैं (खरि च [८।४।५५] सूत्र है)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अजः	अजौ	अजाः ।
द्वितीया	अजम्	,,	अजान् ।
तृतीया	अजेन	अजाभ्याम्	अजैः ।
चतुर्थी	अजाय	,,	अजेभ्यः ।
पंचमी	अजात् (द्)	,,	,,
षष्ठी	अजस्य	अजयोः	अजानाम् ।
सप्तमी	अजे	,,	अजेषु ।
सम्बोधन	हे अज !	हे अजौ !	हे अजाः !

ऐसे ही गज, अश्व, वृक्ष, पाठ, नाद, घोष इत्यादि अकारान्त शब्दोंके पद बनते हैं ।

इकारान्त शब्दोंमें—हरि (पुँल्लिङ्ग) शब्द—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः ।
द्वितीया	हरिम्	,,	हरीन् ।
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः ।
चतुर्थी	हरये	,,	हरिभ्यः ।
पंचमी	हरेः	,,	,,
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम् ।
सप्तमी	हरौ	,,	हरिषु ।
संबोधन	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः ! ।

अजन्त शब्दोंमें नीचे लिखे शब्दोंके पद जान लेनेसे काम चल जाता है ।

अजो हरिः करी भानुर्मरुत्कर्त्ता च चन्द्रमाः ।
सुविद्वान्भगवानात्मा दशैते पुंसि नायकाः ।
रमारुचिर्नदी धेनुर्वाग्धीर्भूर्गौर्वधूस्तथा ।
क्षुत्प्रावृट् च शरच्चैव द्वादश स्त्रीषु नायकाः ।

ज्ञानं दधि पयो वर्म धनुर्वारिजगत्तथा।
मधु नाम मनोहारि दश क्लीबेषु नायकाः॥

इन शब्दोंके पदोंका ज्ञान 'पाणिनीय प्रबोध'से करलेना चाहिये। तिङ् विभक्तियां तो 'ति'-से 'ङ्' तक हैं। जैसे—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	परिष्कृत रूप		
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्	मि	वः	मः

इन्हीं विभक्तियोंमें धातुओंको जोड़ देनेसे आख्यात (क्रिया) पद बन जाते हैं। जैसेः—

अद् + ति = अत्ति* । अद् + तः = अत्तः। अद् + अन्ति = अदन्ति । अद् + सि = अत्सि। अद् + थः = अत्थः। अद् + थ = अत्थ। अद् + मि = अद्मि। अद् + वः = अद्वः। अद् + मः = अद्मः।

ऐसे ही अस् (होना) धातु के पद होते हैं—

अस्ति	स्तः×	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

कुछ धातुओंके तिङ् विभक्तियोंमें मिलते समय धातु और विभक्तिके बीचमें कुछ मिलाना पड़ता है। उसे विकरण कहते हैं। जैसे—पठ् + ति बीचमें 'अ' लगाकर पद बनाते हैं। पठ् + अ + ति = पठति। पठ् + अ + तः = पठतः। पठ् + अ + अन्ति = पठन्ति—यहाँ जो 'अ' आता है वह अन्तिके अ में तन्मय हो जाता है, दीर्घ नहीं होता है, सूत्र (अतो गुणे)—पठसि,

---

* द् + त में मिलता है। इसलिये वह त् हो जाता है। क्योंकि द् घोष है और त अघोष है (खरि च ८।४।५५)

× यहाँ तीनों पुरुषोंके एक वचनको छोड़ कर अन्यत्र सर्वत्र धातुका 'अ' लुप्त हो जाता है।

पठथः, पठथ । पठामि, पठावः पठामः ।—यहाँ उत्तम पुरुषके कुल विभक्तियोंमें 'अ' 'आ' हो जाता है—यह भ्वादिगण कहलाता है। इस गणमें जितने भी धातु हैं, 'अ' लगाकर पद बनाते हैं। जैसे, वद् (बोलना) वदति, वदतः इत्यादि पद बनते हैं।

ऐसे १० गण हैं जिनमें धातु और तिङ् के बीचमें कुछ न कुछ विकरण लगनेसे भिन्न भिन्न पद बन जाते हैं।

भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनुक्रयादी चुरादयः॥

इनके पद बनानेका प्रकार मेरी 'संस्कृत-शिक्षकम्' नामकी हिन्दी पुस्तकसे जानना चाहिए। उससे भी अधिक पढ़ना होतो पाणिनीय प्रबोध पढ़िये।

[३] विभक्त्यर्थ—

१ रामः	राम, रामने	प्रथमा (कर्ता)
२ रामौ	दो राम, दो रामोंने	
३ रामाः	बहुत राम, बहुत रामोंने	
१ रामम्	रामको	द्वितीया (कर्म)
२ रामौ	दो रामोंको	
३ रामान्	बहुत रामोंको	
१ रामेण	रामने या रामसे	तृतीया (करण)
२ रामाभ्याम्	दो रामोंने या दो रामोंसे	
३ रामैः	बहुत रामोंने या बहुत रामोंसे	
१ रामाय	रामके लिये	चतुर्थी (सम्प्रदान)
२ रामाभ्याम्	दो रामोंके लिये	
३ रामेभ्यः	बहुत रामोंके लिये	
१ रामात् (द्)	रामसे	पञ्चमी (अपादान)
२ रामाभ्याम्	दो रामोंसे	
३ रामेभ्यः	बहुत रामोंसे	

१ रामस्य	रामका, के, की	षष्ठी (सम्बन्ध) यह कारक नहीं है ।
२ रामयोः	दो रामोंका, के, की	
३ रामाणाम्	बहुत रामोंका, के, की	
१ रामे	राममें या रामपर	सप्तमी (अधिकरण)
२ रामयोः	दो रामोंमें (पर)	
३ रामेषु	बहुत रामोंमें (पर)	
१ हे राम !	हे राम !	सम्बोधन (यह भी कारक नहीं कहाता)
२ हे रामौ !	हे दो राम !	
३ हे रामाः !	हे बहुत राम !	

जिसका क्रियाके साथ सम्बन्ध होता है उसीको कारक कहते हैं 'राम है', यहाँ रामका होना क्रिया से सम्बन्ध है । रामको देखो । यहाँ रामका देखना क्रियासे सम्बन्ध है । हाथसे रामने किया । यहाँ रामका और हाथका करना क्रियासे सम्बन्ध है । रामके लिये दो । यहाँ रामका देना क्रियासे सम्बन्ध है । रामसे अलग होता है । यहाँ रामका अलगहोना क्रियासे सम्बन्ध है । राममें आसक्त है । यहाँ रामका आसक्ति क्रियासे सम्बन्ध है । रामका बाण है । यहाँ तो रामका किसी क्रिया से सम्बन्ध नहीं है किन्तु 'बाण' से सम्बन्ध है । इसीलिए सम्बन्ध कारक नहीं । यों ही सम्बोधनका भी किसी क्रियासे सम्बन्ध नहीं होता । हे राम ! यहां रामके साथ कोई भी क्रिया नहीं है । संस्कृतका एक श्लोक है । जिसमें सभी विभक्तियोंका प्रयोग हुआ है । उसको पढ़कर अर्थ करो—

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति पृथग्जगत्स्थितिरहो रामस्य दासोऽस्म्यहम्
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे हे राम ! मामुद्धर ! ॥

(इति कारकम् समाप्तम्)

—०—

समासः—

संक्षेप करनेको समास कहते हैं। समास और संक्षेप ये दोनों पर्य्याय वाची शब्द हैं। अनेक पदोंकी विभक्तियोंको हटाकर एक पद बना लेना। यही तो समासका काम है, इसलिये यह 'समास' यथार्थ नाम वाला शब्द है। जैसेः रामस्य दासः = रामदासः। यहाँ 'रामस्य' की षष्ठी विभक्ति हटाकर 'दास' शब्दके साथ मिला दिया गया तो यह समास होगया। ऐसे छ समास हैं जिनका एक श्लोकमें उल्लेख है।

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः॥

संस्कृतमें समासोंका विग्रह करके अर्थ किया जाता हैं। उन्हीं विग्रहोंसे समासोंको पहचाना भी जाता है। उसके लिये भी श्लोक है।

चकारबहुलो द्वन्द्वः सचासौ कर्मधारयः।
यस्य येषां बहुव्रीहिः शेषस्तत्पुरुषो मतः॥

जिसके विग्रह वाक्यमें 'च' बहुत रहें, वह द्वन्द्व, जिसके विग्रहमें 'स चासौ' कहा जाय, वह कर्मधारय, जिसमें 'यस्य' या 'येषां' पदका प्रयोग हो वह बहुव्रीहि समास होता है। इससे जो बच गया वह तत्पुरुष है। जिसके विग्रहमें पहला पद तो द्वितीयादि विभक्तिवाला होगा और अन्तिमपद प्रथमान्त ही रहेगा वही तत्पुरुष है। अव्ययीभावमें एक शब्द तो अवश्य अव्यय रहेगा ही तथा समास हो जाने पर वह समस्त पद भी 'अव्यय' ही होजाता है। विग्रहके साथ संक्षेपसे ही समास दिखाया जाता है—

१ द्वन्द्व—

रामश्च, कृष्णश्च = रामकृष्णौ। शशश्च कुशश्च पलाशश्च = शशकुशपलाशाः। पाणी च पादौ च तयोः समाहारः पाणिपादम्। मार्दङ्गिकाश्च पाणविकाश्च तेषां समाहारः मार्दङ्गिकपाणविकम्।

२ कर्मधारय—

वीरश्चासौ बालः = वीरबालः। वीरौ च तौ बालौ = वीरबालौ। वीराश्च ते बालाः

= वीरबालाः । रक्ता चासौ लता रक्तलता, रक्ते च ते लते = रक्तलते, रक्ताश्च ताः लताः रक्तलताः । नीलं च तदुत्पलं = नीलोत्पलम्, नीले च ते उत्पले = नीलोत्पले, नीलानि च तानि उत्पलानि = नीलोत्पलानि ।

३ बहुव्रीहिः—पीतम् अम्बरं यस्य = स पीताम्बरः (हरिः)
पीतम् अम्बरं यस्याः सा पीताम्बरा (देवी)
पीतम् अम्बरं यस्य तत् पीताम्बरम् (कुलम्)
वीरः पुरुषः यस्मिन् = स वीरपुरुषः (ग्रामः)
वीरः पुरुषः यस्यां = सा वीरपुरुषा (पुरी)
वीरः पुरुषः यस्मिन् = तत् वीरपुरुषम् (नगरम्)

४ तत्पुरुषः—ग्रामं गतः = ग्रामगतः । रामेण कृतम् = रामकृतम् । देवाय हितम् = देवहितम् । विद्यालयाद् आगतः = विद्यालयागतः । तस्य पुत्रः = तत्पुत्रः । चित्ते लयः = चित्तलयः । इत्यादि ।

५ अव्ययीभावः—शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति । कुम्भस्य समीपम् = उपकुम्भम् । हरौ इति = अधिहरि—इत्यादि (इति समासः) ।

[५] सन्धिज्ञानम्—

"अइउ (ण्) ऋऌ (क्) एओ (ङ्) ऐऔ (च्) हयवर (ट्) ल (ण्)" । ये जो प्रत्याहार सूत्र हैं । सूक्ष्म दृष्टिसे देखने पर इन्हींमें स्वरसन्धि समाप्त है । जैसेः—अ इ उ ऋ ऌ । इन पाचों स्वरोंका समान मेल होतो दीर्घ सन्धि हो जाती है । क्योंकि एक मात्रा ह्रस्वकी होती है, दो मात्रा दीर्घकी होती है । जैसेः—भ + अ = आ । राम + अयन = रामायण । इ + इ = ई । हरि + इच्छा = हरीच्छा । उ + उ = ऊ । भानु + उदय = भानूदय । ऋ + ऋ = ॠ । पितृ + ऋण = पितॄण । इसी प्रकार दीर्घ समान स्वरोंका भी तो दीर्घ ही होगा । जैसेः—विद्या + आलय = विद्यालय । गौरी + ईश = गौरीश । वधू + ऊर्ध्व = वधूर्ध्व इत्यादि । इससे यह भी सिद्ध होता है कि चाहे ह्रस्व या दीर्घ कोई भी समान स्वर आगे पीछे रहेंगे तो इन दोनोंको मिलादेनेसे दीर्घ सन्धि हो जाती है । वेध + आलय = वेधालय । विद्या + अध्ययन = विद्याध्ययन । कपि + ईश = कपीश । दैवी + इच्छा = दैवीच्छा इत्यादि । इसीके लिये पाणिनिसूत्र है—अकः सवर्णे दीर्घः [६।१।१०१] अक् = ह्रस्व या दीर्घ ।

विषम मेलके लिये गुण सन्धि और वृद्धि सन्धि है। गुणसन्धि तो यह है (अ, आ + इक = ए, ओ, अर् अल्) बाईं ओर ह्रस्व या दीर्घ अकार हो बाद दाहिनी ओर ह्रस्व या दीर्घ इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) हो तो क्रमसे ए, ओ, अर्, अल् हो जाते हैं। जैसेः—राम + इच्छा = रामेच्छा। दिन + ईश = दिनेश। रमा + इच्छा = रमेच्छा। महा + ईश = महेश। देव + ऋषि = देवर्षि। महा + ऋषि = महर्षि। विद्या + ऋद्धि = विद्यर्द्धि। इत्यादि। इसका सूत्र है 'आद्गुणः (इकि[2] पूर्वपरयोः[3] एकः)' [६।१।८७] अ, आ + एच् = ऐच्। अ या आ के बाद ए, ओ, ऐ, औ परे हो तो दोनों मिलके ऐ औ हो जाते हैं। जैसेः—एक + एक = एकैक। महा + एला = महैला एक + ऐक्य = एकैक्य। महा + ऐश्वर्य्य = महैश्वर्य्य। सूप + ओदन = सूपौदन। महा + ओघ = महौघ। पुत्र + औत्सुक्य = पुत्रौत्सुक्य। गङ्गा + औत्कर्ष = गङ्गौत्कर्ष। इसका सूत्र है वृद्धिरेचि [६।१।८८]

इक् + विषम अच् = यण् इ, उ, ऋ ऌ के बाद कोई भी विषम अच् (स्वर) हो तो यण् य, व, र, ल हो जाता है। जैसेः—दधि + अत्र = दध्यत्र। दधि + आनय = दध्यानय, दधि + उदक = दध्युदक। भगिनी + ऋण = भगिन्यृण। मधु + अत्र = मध्वत्र। मधु + आनय = मध्वानय। ननु + इह = नन्विह। इत्यादि। इसके लिये सूत्र है इको यण् अचि [६।१।७७]

एच् + अच् = अय्, अव् आय्, आव्। एओ ऐऔके बाद यदि अच् परे हो तो क्रम से ही ए का अय् ओका अव् ऐका आय् और औका आव् हो जाता है। जैसेः—ने + अन = नयन। ते आगताः तयागताः। भो अति = भवति। गो + आम् + गवाम्। नै + अकः = नायकः। नद्यै + आस्था = नद्यायास्था। पौ + अकः = पावकः। हरौ + आदरः हरावादरः। इत्यादि। सूत्र है एचोऽयवायावः।

यदि पदान्त एङ् = एओ के बाद कोई ह्रस्व अकार हो तो वहाँ एङ् को अय्, अव्, नहीं होगा किन्तु वह ह्रस्व अकार उसी एओ में मिल जायगा। जैसेः—हरे + अव = हरेऽव। शिवो अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः। सूत्र है—एङः पदान्तादति [६।१।१०९] स्वरसन्धि समाप्त।

—०—

हल् सन्धि—चय् + अश् = जश् । अघोषमें केवल वर्गका पहला अक्षर क् च् ट्, त् प् के बाद कोई भी स्वर या घोष अक्षर हो तो वह अपना तीसरा हो जाता है । जैसे वाक् + ईश = वागीश । अच् + अन्त = अजन्त । अट् + आगम = अडागम । तत् + आदि = तदादि । ककुप् + इयम् = ककुबियम् । सूत्र है झलां जशोऽन्ते [८।२।३९] । इसका उलटा सूत्र है—खरि च [८।४।५५] जश् + खर = चय् वर्गके तीसरे अक्षर पहले अक्षर हो जाते हैं, यदि खर् प्रत्याहारपरे हो । जैसे—वाग् + कृता = वाक्कृता । तद् + सरति = तत्सरति । चय् + मम् = मम् । यदि चय् प्रत्याहार (चटतकप) के बाद मम् (मङ ण न) परे हो तो चय्का स्ववर्गीय जम् विकल्प से होता है, जैसे—वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम् । अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम् । आट् + नद्याः = आण्नद्याः । तत् + मात्रम् = तन्मात्रम् । ककुप् + महिमा = ककुम्महिमा । इसका सूत्र है—यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा [८।४।४५] न् + छव् = स्थानानुसार अनुनासिक तथा शर् । यदि पदान्त न् के बाद छव् प्रत्याहार का अक्षर हो तो उसीके स्थानीय शर् होगा और उसके पहले स्वर को अनुनासिक कर दिया जाता है । जैसे—राजन् + चित्रम् = राजँश्चित्रम् । सन् + छदः = संश्छदः । विद्वान् + तनोति = विद्वाँस्तनोति । सन् + थकितः = सँस्थकितः । विद्वान् + टीकटे = विद्वांष्टीकते । सन् + ठक्कुरः = सँष्ठक्कुरः । सूत्र है—नश्छव्यप्रशान् [८।३।७] इति हल्सन्धिः ।

विसर्गसन्धिः—र् + खर् = : (विसर्ग) किसी भी रेफ का खर् प्रत्याहार परे रहने पर विसर्ग ही होगा । यदि आगेके अक्षर में मिलाना ही चाहें तो क ख प फ में आधा विसर्ग कर देना होगा, (जिसका कख में जिह्वामूलीय नाम पढ़ता है, पफ में उपध्मानीय नाम पढ़ता है ।) जैसे—पुनर् + करोति = पुनः करोति पुन꞉करोति । भ्रातर् + पठ = भ्रातः पठ भ्रात꞉पठ ।

अन्य अक्षर त थ स परे रहने पर स् , च छ श परे रहने पर श, और ट ठ ष परे रहने पर ष् होता है । यों खर् प्रत्याहार के १३ अक्षरोंमें तो यही सन्धि होती है । इसके सूत्र पांच हैं—**खरवसानयोर्विसर्जनीयः** [८ । ३ । १५]

कुप्वो≍क≍पौ च [८ । ३ । ३७] विसर्जनीयस्य सः [८ । ३ । ३४] स्तोः श्चुना श्चुः [८ । ४ । ४०] ष्टुना ष्टुः [८ । ४ । ४१]

इच् + : + अश् = र् । इच् के बाद विसर्ग हो उसके बाद कोई भी अश् प्रत्याहारके अक्षर (स्वर् या वर्ग के ३,४,५ वाँ अक्षर या यरलव् ह अक्षर हों तो विसर्ग का रेफ होता है । जैसे—हरिः + अत्र = हरिरत्र । हरिः + हसति = हरिर्हसति । गौः + अत्र = गौरत्र । सूत्र—ससजुषो रुः [८।२।६६] इससे सकारका जब रेफ हो जाता है तो उस रेफ का विसर्ग नहीं हो सकता क्योंकि विसर्ग करनेवाला सूत्र र् (रेफ) के बाद खर् प्रत्यहार या अवसान (विराम) किसी भी अक्षरका न रहना खोजता है । खरवसानयोर्विसर्जनीयः [८।३।१५] वह यहाँ नहीं मिलता यहाँ तो र् (रेफ) के बाद अश् प्रत्यहारका अक्षर रहता है इसलिये वह र् आगेके अक्षर में मिल जाता है यही निष्कर्ष है विसर्ग का र नहीं होता है ।

आः + अश् = लोप । आके बादके विसर्गका अश् प्रत्याहारके अक्षरोंमें लोप हो जाता है । जैसे—रामाः + अत्र = रामा अत्र । रामाः + हसन्ति रामा हसन्ति । सूत्र है—भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि [८।३।१७] लोपः शाकल्यस्य [८।३।१९] हलि सर्वेषाम् [८।३।२२] यहाँ भी ससजुषो रुः [८।२।६६] से होने पर इस सूत्र से यकार हो जाता है बाद में उसका लोप हो जाता है ।

अः + आच् = लोप = अके बादके विसर्गका लोप हो जाता है यदि उसके बाद आच् (अ छोड़ कर) कोई भी स्वर हो तो । रु का य होता है बाद उसका लोप हो जाता है । जैसे—रामः + आयाति राम आयाति ।

अः + अ या हस् = उ अ या हस् । यदि अ के बाद : (विसर्ग) हो और उसके बाद केवल 'अ' स्वर या हस् प्रत्याहारके कोई भी अक्षर हो तो (विसर्ग) का 'उ' होगा बाद गुण और पूर्वरूप होकर सन्धिका कार्य पूर्ण होगा । जैसे :—रामः + अत्र = रामोऽत्र (राम + उ + अत्र = रामोऽत्र)

लिङ्गानुशासनम्—

जो शब्द घञ्, अच्, अप् प्रत्यय लगकर बने हैं। वे पुंल्लिङ्ग होते हैं। जैसे :—रामः, जयः, करः, नङ् प्रत्यय वाले जैसे :—प्रश्नः, यत्नः। किप्रत्यय वाले घु संज्ञक धातुसे बने शब्द। जैसे :—विधिः, निधिः। मि, ति अन्तवाले शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे :—भूमिः, अवनिः, हानिः। विंशत्यादि आनवति तक संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग और एकवचन होते हैं। जैसे :—विंशतिः, त्रिंशत्, भावार्थक ल्युट् प्रत्यय नपुंसक होता है। जैसे :—हसनम्, गमनम् इस् उस् अन्तवाले शब्द भी नपुसक होते हैं। सर्पिः, धनुः। लोपध शब्द भी नपुंसक हैं। जैसे :—फलम्, मूलम्।

प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभिव्यधिसूदतिनिप्रतिपर्य्यपयः।
उप-आङितिखे रेष सविंशति उपसर्गगणः कथितः कविना॥

उपसर्ग—प्र, परा, अप्, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, अभि, वि, अधि, सु, उत्, अति, नि, प्रति, परि, अपि, उप, आङ्, बस इतने उपसर्ग हैं। अव्यय, निपात तो हिन्दी के समान शब्द हैं। जैसे :—यत्र, तत्र, क्व, कुत्र, सुदि, वदि, प्रातः, सुतराम्, नितराम्, च, व, ह, एवम्, नूनम्, मा, न, अपि, भो, हे—इत्यादि।

बस इतनी बातें जान लेनेपर 'ऋजुपाणिनीयम्' से सभी सूत्रोंका अर्थ समझ लेना चाहिये। इसके बाद 'पाणिनीय प्रबोध' के द्वारा सभी प्रयोगोंको साधकर उनका शुद्ध स्वरूप समझ लेना चाहिये। बस यों छ महीनेमें संस्कृत व्याकरणका व्यावहारिक ज्ञान पर्य्याप्त हो जाता है। दो मासमें सूत्रोंको कण्ठस्थ करना, एक मासमें उनका अर्थ समझना (वयस्क सज्जन तो अर्थ समझते चलेंगे और सूत्रोंको अभ्यस्त भी करते चलेंगे। उनका दोनों काम साथ चलेगा) बादके तीन मासमें प्रयोगोंको साधना। बस यही संस्कृत पढ़नेकी सबसे सरल पद्धति है। जिसको भी लगन, और श्रद्धा हो वह करके देखे। जो भी उसके सामने अड़चन उपस्थित हो उसको दूर करनेके लिये मुझे पत्र लिखे।

दिनाङ्क ११-१०-५३	श्रीगोपालशास्त्री (दर्शनकेशरी)
बदरीनाथ धाम	डी. ५९।३१ गार्डनकालनी,
(गढ़वाल)	सिगरा, बनारस-१

मया मालवीयाज्ञया वर्षपूर्वैः
प्रयत्नान्निबद्धोऽधुना ग्रन्थ एषः ।
प्रतिज्ञायते मासषट्केन बालाः
पठन्तो भवेयुर्ध्रुवं संस्कृतज्ञाः ॥ १ ॥

नौरोजीलोकमान्यप्रभृतिनरवरैर्गान्धिबोसादिभिस्तैः
कांग्रेसान्दोलनेन ध्रुवमधिगमिते भारतीये स्वराज्ये ।
श्रीगोपालोपनद्धः सरलसुरगिरा मालवीयोपदिष्टः
सम्पूर्णानन्दशिष्टश्चिरमिह जयतात्पाणिनीयर्जुपाठः ॥ २ ॥

सम्प्रत्युपेते ऋजुपाणिनीयके विज्ञानचन्द्रे सुरगीर्नभस्तले ।
विभीषिका व्याकृतिगा लयं व्रजेत्समाजतः संस्कृतसेविनां द्रुतम् ॥३॥

———

* श्री कृष्णः शरणम्मम *

संक्षिप्ताष्टाध्यायी

प्रथमाध्याये प्रथमः पादः

मङ्गलाचरणम्

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात् ।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ॥ १ ॥
दिव्यं प्रसादमासाद्य मालवीयमहामुनेः ।
ऋजुम्पाणिनिसूत्राणां सारसङ्ग्रहमारभे ॥ २ ॥
विस्मृतः पाणिनेरार्षाध्ययनाध्यापनक्रमः ।
प्राचीनस्तत्प्रचारेण महेशः सम्प्रसीदतात् ॥ ३ ॥

(१) अइउण् (२) ऋऌक् (६) घढधष् (१०) जबगडदश् (११) खफछठथचटतव् (१२) कपय
(३) एओङ् (४) ऐऔच् (५) हयवरट् (६) लण् (७) ञमङणनम् (८) झभञ् (१३) शषसर् (१४) हल् ।

वृद्धिरादैच् १ अदेङ्गुणः २ इको गुणवृद्धी३ न धातुलोप आर्धधातुके ४ ङ्किति च ५ हलोऽनन्तराः संयोगः ७ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ८ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ९ ईदूदेद द्विवचनं प्रगृह्यम् ११ आद्यन्तवदेकस्मिन् २१ तरप्तमपौ घः २२ बहुगणवतुडतिसंख्या २३ ष्णान्ता षट् २४ क्तक्तवतू निष्ठा २६ सर्वादीनि सर्वनामानि २७ स्वरादिनिपातमव्ययम् ३७ ताद्धितश्चासर्वविभक्तिः ३८ कृन्मेजन्तः ३९ क्त्वातोसुन्कसुनः ४० अव्ययीभावश्च ४१ शि सर्वनामस्थानम् ४२ सुडनपुंसकस्य ४३ इग्यणः सम्प्रसारणम् ४५ अद्यन्तौ टकितौ ४६ भिदचोऽन्त्यात्परः ४७ एच इग्घ्रस्वादेशे ४८ षष्ठी स्थाने योगा ५१ अलोऽन्त्यस्य ५२ ङिच्च ५३ आदेरन्त्यस्य ५४ अनेकाल् शित् सर्वस्य ५५ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ५६ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ५७ अदर्शनं लोपः ६० प्रत्ययस्यलुक्श्लुलुपः ६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ६२ न लुमताऽङ्गस्य ६३ अचोऽन्त्यादिटि ६४ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा ६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ६६ तस्मादित्युत्तरस्य ६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ६८ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः ६९ तपरस्तत्कालस्य ७० आदिरन्त्येन सहेता ७१ येन विधिस्तदन्तस्य ७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् ७३ त्यदादीनि च ७४ इति प्रथमः पादः ५०

अथ द्वितीयः पादः

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् १ विज इट् २ सार्वधातुकमपित् ४ असंयोगाल्लिट् कित् ५ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ७ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च ८ इको झल् ९ हलन्ताच्च १० लिङ् सिचावात्मनेपदेषु ११ उश्च १२ हनः सिच् १४ स्थाध्वोरिच्च १७ नक्त्वा सेट् १८ ऊकालोऽज्झ्रस्वा

दीर्घप्लुतः २७ अचश्च २८ उच्चैरुदात्तः २९ नीचैरनुदात्तः ३० समाहारः स्वरितः ३१ अपृक्त एकाल्प्रत्ययः ४१ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ४२ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ४३ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ४४ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ४५ कृत्तद्धितसमासाश्च ४६ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ४७, गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ४८जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् ५८ अस्मदो द्वयोश्च ५९ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ६४ पुमान् स्त्रिया ६७ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ६९ ॥ पिता मात्रा ॥७०॥ श्वशुरः श्वश्रूवा ॥७१॥ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ॥७२॥ इति द्वितीयः पादः ॥८४॥

अथ तृतीयः पादः

भूवादयो धातवः ॥ १ ॥ उपदेशेऽजनुनासिक इत् ॥२॥ हलन्त्यम् ॥३॥ न विभक्तौ तुस्माः॥४॥ आदिर्ञिटुडवः ॥५॥ षः प्रत्ययस्य ॥६॥ चुटू ॥७॥ लशकतद्धिते ॥८॥ अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ॥ १२ ॥ भावकर्मणोः ॥१२॥ नेर्विशः ॥ १७ ॥ परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥१८॥ विपराभ्यां जेः ॥ १९ ॥ समवप्रविभ्यः स्थः ॥ २२ ॥ उपान्मन्त्रकरणे ॥ २५ ॥ शदेः शितः ॥ ६० ॥ म्रियते र्लुङ्लिङोश्च ॥६१ ॥ पूर्ववत्सनः ॥ ६३ ॥ आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य ॥ ६३ ॥ भुजोऽनवने ॥ ६६ ॥ स्वारितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥७२ ॥ णिचश्च ॥ ७४ ॥ शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् ॥ ७८॥ व्यङ्परिभ्यो रमः ॥ ८३ ॥ वाक्यषः ॥ ९० ॥ द्युद्भ्यो लुङि ॥ ९१ ॥ इति तृतीयः पादः ॥ १११ ॥

अथ चतुर्थः पादः

आकडारादेका संज्ञा ॥१ ॥ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥ २ ॥

यू स्त्र्याख्यौ नदी ॥३॥ नेयङुवङ् स्थानावस्त्री ॥४॥ वाऽमि ॥५॥ ङिति ह्रस्वश्च ॥६॥ शेषोध्यसखि ॥७॥ पतिः समास एव ॥८॥ ह्रस्वं लघु ॥ १० ॥ संयोगे गुरु ॥११॥ दीर्घञ्च ॥१२॥ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ॥१३॥ सुप्तिङन्तं पदम् १४ ॥ नः क्ये ॥१५॥ सिति च ॥ १६ ॥ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥१७॥ यचि भम् ॥१८॥ कारके ॥२३॥ ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥२४॥ भीत्रार्थानां भयहेतुः ॥ २५ ॥ वारणार्थानामीप्सितः ॥२७॥ जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ ३० ॥ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥३२॥ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥३३॥ धारेरुत्तमर्णः ॥ ३५ ॥ स्पृहेरीप्सितः ॥ ३६ ॥ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ॥ ३७ ॥ साधकतमं करणम् ॥४२॥ आधारोऽधिकरणम् ४५ अधिशीङ्स्थासां कर्म ४६ उपान्वध्याङ्वसः ४८ कर्तुरीप्सिततमंकर्म ४९ अकथितञ्च ५१ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता सणौ ५२ स्वतंत्रः कर्ता ५४ तत्प्रयोजको हेतुश्च ५५ प्रागीश्वरान्निपाताः ५६ चादयोऽसत्वे ५७ प्रादयः ५८ उपसर्गाः क्रियायोगे ५९ गतिश्च ६० ऊर्यादिच्विडाचश्च ६१ ते प्राग्धातोः ८० कर्मप्रवचनीयाः ८३ अधिरीश्वरे ९७ लः परस्मैपदम् ९९ तङानावात्मनेपदम् १०० तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः १०१ तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः १०२ सुपः १०३ विभक्तिश्च १०४ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः १०५ अस्मद्युत्तमः १०७ शेषे प्रथमः १०८ परः सन्निकर्षः संहिता १०९ विरामोऽवसानम् ११० इति प्रथमाध्याये तुरीयः पादः १६५ ।

अथ द्वितीयाध्याये प्रथमः पादः

समर्थः पदविधिः १ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे २ प्राक्कडारात्समासः ३ सह सुपा ४ अव्ययीभावः ५ अव्ययं विभक्ति-

समीपसमृद्धिवृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ६ तत्पुरुषः २२ द्विगुश्च २३ द्वितीयाऽऽश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः २४ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ३० कर्तृकरणे कृता बहुलम् ३२ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ३६ पञ्चमी भयेन ३७ सप्तमी शौण्डैः ४० पूर्वकालिक सर्वजरत्पुराणनवकेवलासमानाधिकरणेन ४९ दिक्संख्ये संज्ञायाम् ५० तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच ५१ संख्यापूर्वो द्विगुः ५२ उपमानानि सामान्यवचनैः ५५ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ५६ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ५७ इति प्रथम पादः १८६ ।

अथ द्वितीयः पादः

नञ् ६ षष्ठी ८ कुगतिप्रादयः १८ उपपदमतिङ् १९ शेषो बहुव्रीहिः २३ अनेकमन्यपदार्थे २४ संख्याऽव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये २५ चार्थे द्वन्द्वः २९ उपसर्जनं पूर्वम् ३० राजदन्तादिषु परम् ३१ द्वन्द्वे घि ३२ अजाद्यदन्तम् ३२ अल्पाच्तरम् ३४ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ३५ निष्ठा ३६ वाहिताग्न्यादिषु ३७ कडाराः कर्मधारये ३८ इति द्वितीयः पादः २०३ ।

अथ तृतीयः पादः

अनभिहिते १ कर्मणि द्वितीया २ अन्तरान्तरेण युक्ते ४ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ५ अपवर्गे तृतीया ६ चतुर्थी सम्प्रदाने १३ नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च १६ कर्तृकरणयोस्तृतीया १८ सहयुक्तेऽप्रधाने १९ येनाङ्गविकारः २० षष्ठी हेतुप्रयोगे २६ अपादाने पञ्चमी २८ अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते २९ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ३२ दूरान्तिकार्थैर्योगे द्वितीया च ३५ सप्तम्यधिकरणे

च ३६ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ३७ षष्ठी चानादरे ३८ यतश्च निर्धारणम् ४१ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे - प्रथमा ४६ सम्बोधने च ४७ एकवचनं सम्बुद्धिः ४९ षष्ठी शेषे ५० अधीगर्थदयेषां कर्मणि ५२ कर्तृकर्मणोः कृति ६५ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ६९ कृत्यानां कर्तरि वा ७१ इति तृतीयः पादः २३१

अथ चतुर्थः पादः

द्विगुरेकवचनम् १ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य्यसेनाङ्गानाम् २ स नपुंसकम् १७ अव्ययीभावश्च १८ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः २६ रात्राह्नाहाः पुंसि २९ अर्धर्चाः पुंसि च ३१ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ३२ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौचानुदात्तौ ३३ द्वितीयाटौस्वेनः ३४ आर्धधातुके ३५ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ३६ लुङ्सनोर्घस्लृ ३७ लिट्यन्यतरस्याम् ४० हनो वध लिङि ४२ लुङि च ४३ इणो गा लुङि ४५ णौ गमिरबोधने ४६ सनि च ४७ इडश्च ४८ गाङ् लिटि ४९ विभाषा लुङ्लृङोः ५० अस्तेर्भूः ५२ ब्रुवो वचिः ५३ चक्षिङः ख्याञ् ५४ वा लिटि ५५ एयत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः ५८ सुपो धातुप्रातपदिकयोः ७१ अदिप्रभृतिभ्यः शपः ७२ यङोऽचि च ७४ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ७५ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ७७ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः ७८ तनादिभ्यस्तथासोः ७९ आमः ८१ अव्ययादाप्सुपः ८२ नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ८३ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ८४ लुटः प्रथमस्य डारौरसः ८५ इति द्वितीयाध्याये चतुर्थः पादः २७०

अथ तृतीयाऽध्याये प्रथमः पादः

प्रत्ययः १ + परश्च २ गुप्तिजकिद्भ्यः सन् ५ धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ७ सुप आत्मनः क्यच् ८ काम्यच्च ९ उपमानादाचारे १० कर्तुः

क्यङ् सलोपश्च ११ धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् २२ नित्यं कौटिल्ये गतौ २३ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक - सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् २५ हेतुमति च २६ कण्ड्वादिभ्यो यक् २७ सनाद्यन्ता धातवः ३२ स्यतासी ललुटोः ३३ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि ३५ इजादेश्च गुरुमतो ऽनृच्छः ३६ दयायासश्च ३७ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ३८ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ३९ कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ४० विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ४१ च्लि लुङि ४३ च्लेःसिच् ४४ शल इगुपधादनिटः क्सः ४५ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् ५२ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ५२ लिपिसिचिह्नश्च ५३ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ५४ पुषादिद्युताद्यृलदितः परस्मैपदेषु ५५ सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च ५६ इरितो वा जृस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ५८ चिण् ते पदः ६० दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्यो - ऽन्यतरस्याम् ६१ चिण् भावकर्मणोः ६६ सार्वधातुके यक् ६७ कर्तरि शप् ६८ दिवादिभ्यः श्यन् ६९ वा भ्राशम्लाशभ्रमुक्रमुत्रसित्रुटिलषः ७२ स्वादिभ्यः श्नुः ७३ श्रुवः शृच ४७ तुदादिभ्यः शः ७७ रुधादिभ्यःश्नम् ७८ तनादि कृञ्भ्य उः ७९ क्रयादिभ्यः श्ना ८१ हलः श्नः शानज्झौ ८३ धातोः ९१ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ९२ कृदतिङ् ९३ वा ऽसरूपोऽस्त्रियाम् ९४ कृत्याः ९५ तव्यत्तव्यानीयरः ९६ अचो यत् ९७ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् १०९ ऋहलोर्ण्यत् १२४ ण्वुल्तृचौ १३३ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः १३४ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः १३५ आतश्चोपसर्गे १३६ इति प्रथमः पादः ३३० ।

अथ द्वितीयः पादः

कर्मण्यण् १ आतोऽनुपसर्गे कः ३ स्पृशोऽनुदके क्विन् ५८ त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च

६० आतो मनिन्क्वनिव्वनिपश्च७४ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ७५ क्विप् च ७६ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ७८ भूते ८४ सप्तम्यां जनेर्डः ९७ अन्येष्वपि दृश्यते १०१ निष्ठा १०२ लिटः कानज्वा १०६ क्वसुश्च १०७ लुङ् ११० अनद्यतने लङ्। परोक्षे लिट्। लट् स्मे ११८ वर्तमाने लट् १२३ लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे १२४ तौ सत् १२७ आक्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु १३४ सनाशंसभिक्ष उः १६८ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप् १७७ अन्येभ्योऽपि दृश्यते १७८ इति द्वितीयः पादः ३५६

अथ तृतीयः पादः

उणादयो बहुलम् १ भविष्यति गम्यादयः ३ तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् १० लट् शेषे च १३ लटः सद्वा १४ अनद्यतने लुट् १५ पदरुजविशस्पृशो घञ् १६ भावे १८ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् १९ एरच् ५६ ऋदोरप् ५७ ड्वितः क्तिः ८८ द्वितोऽथुच् ८९ उपसर्गे घोः किः ९२ कर्मण्यधिकरणे च ९३ स्त्रियां क्तिन् ९४ अ प्रत्ययात् १०२ गुरोश्च हलः १०३ षिद्भिदादिभ्योऽङ् १०४ ण्यासश्रन्थो युच् कृत्यल्युटो बहुलम् ११३ नपुंसके भावेक्तः ११४ ल्युट् च ११५ करणाधिकरणयोश्च ११७ पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण १८ अवे तॄस्रोर्घञ् १२० हलश्च १२१ ईषद्दुःसुषुकृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् १२६ आतो युच् १२८ वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा १३१ लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ १३९ भूते च १४० हेतुहेतुमतोर्लिङ् १३५ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्। प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषुकृत्याश्च। अर्हे कृत्यतृचश्च। आशिषि लिङ्लोटौ १७३ माङि लुङ् १७५ स्मोत्तरे लङ्च ७६ इति तृतीयः पादः।

—अथ चतुर्थः पादः—

अलं खल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा १८ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले २१ आभीक्ष्ण्येणमुल् च २२ कर्तरि कृत । लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ६९ तयोरेवकृत्यक्तखलर्थाः ७० तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्ताताञ्झथासाथान्ध्वमिड्वहिमहिङ् ७८ टित आत्मनेपदानां टेरे ७९ थासः से ८० लिटस्तझयोरेशिरेच् ८१ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमा ८२ विदो लटो वा ब्रुवः पञ्चादित आहो ब्रुवः ८४ लोटो लङ्वत् ८५ एरुः ८६ सेर्ह्यपिच्च ८७ मेर्निः ८९ आमेतः ९० सब्राभ्यां वामौ ९१ आडुत्तमस्य पिच्च ९२ एत ऐ ९३ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ९७ स उत्तमस्य ९८ नित्यं ङितः ९९ इतश्च १०० तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम: १०१ लिङः सीयुट् १०२ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च १०३ किदाशिषि १०४ झस्य रन् १०५ इटोऽत् १०६ सुट् तिथोः १०७ झेर्जुस् १०८ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च १०९ आतः ११० लङः शाकटायनस्यैव १११ तिङ् शित् सार्वधातुकम् ११२ आर्धधातुकं शेषः ११४ लिट् च ११५ लिङाशिषि ११६ इति तृतीयाध्याये चतुर्थः पादः ३४८

———

अथ चतुर्थाध्याये प्रथमः पादः

ङ्याप् प्रातपदिकात् १ स्वौजसमौट्च्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्यांभ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् २ स्त्रियाम् ३ अजाद्यतष्टाप् ४ ऋन्नेभ्यो ङीप् ५ उगितश्च ६ न षट्स्वस्रादिभ्यः १० मनः ११ अनुपसर्जनात् १४ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयपठकठञ्कञ्क्वरपः १५ वयसि प्रथमे २० द्विगोः २१ अन्यतो ङीष् ४० षिद्गौरादिभ्यश्च ४१ वोतो गुणवचनात् ४४ बह्वादिभ्यश्च ४५ पुंयोगादाख्यायाम् ४८ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणमानुक् ४९ ग्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ५४ न क्रोडादिबह्वचः ५६ ऊङुतः ६६ उरूत्तरपदादौपम्ये ६९ वद्धिताः ७६ यूनस्तिः ७७ समर्थानां प्रथमाद्वा ८२ प्राग्दीव्यतोऽण्८३ तस्यापत्यम् ९२ अत इञ् ९५ स्त्रीभ्यो ढक् १२० इति प्रथमः पादः ॥४६७॥

अथ द्वितीयः पादः

तेन रक्तं रागात् १ नक्षत्रेण युक्तः कालः ३ सास्मिन् पौर्णमासीति संज्ञायाम् २१ साऽस्य देवता २४ तस्य समूहः ३७ तदधीते तद्वेद ५९ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् ६० क्रमा दिभ्यो वुन् ६१ तदस्मिन्नस्तीतिदेशे तन्नाम्नि ६७ तेन निर्वृत्तम् ६८ तस्य निवासः ६९ अदूर भवश्च ७० ओरञ् ७१ शेषे ९२ राष्ट्रावारपाराद्घखौ ९३ग्रामाद्यखञौ ९४ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ९८ द्यु प्रागपागुदक्प्रतीचो यत् १०१ अव्ययात्त्यप् १०४ वृद्धाच्छः ११४ भवतष्ठक्छसौ ११५ इति द्वितीयः पादः ॥४८९॥

अथ तृतीयः पादः

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च १ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ २ तवकममकावेकवचने ३ मध्यान्मः ८ कालाट्ठञ् ११ सायंचिरं प्राह्णे प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च २३ तत्र जातः २५ तत्र भवः ५३ तत आगतः ७४ सोऽस्य निवासः ८६ तेन प्रोक्तम् १०१ तस्येदम् १२० तस्य विकारः १३४ अवयवे च प्राण्यौषधिवृक्षेभ्यः १३५ मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः १४३ गोश्च पुरीषे १४५ गोपयसोर्यत् १६० द्रोश्च १६१ इति तृतीयः पादः ५०७

अथ चतुर्थः पादः

प्राग्वहतेष्ठक् १ तेन दीव्यति खनति जयति जितम् २ तरति ५ चरति ८ संसृष्ट २२ तदस्य पण्यम् ५१ शिल्पम् ५ प्रहरणम् ५७ अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः ६० शीलम् ६१ प्राग्घिताद्यत् ७५ तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् ७६ तत्र साधुः ९८ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् १०४ सभाया यः १०५ इति चतुर्थाध्याये तुरीयः पादः ॥५२३॥

अथ पञ्चमाऽध्याये प्रथमः पादः

प्राक् क्रीताच्छः १ हितम् ५ शरीरावयवाद्यत् ६ आत्मन विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ९ प्राग्वहतेष्ठञ् १८ पंक्तिविंशतित्रिंशच्त्वारिंशत्-पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ५९ तदर्हति (ठञ्) ६३ दण्डादिभ्यो यः ६६ तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः ११५ तत्र तस्येव ११६ तस्य भावस्त्वतलौ ११९ पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा १२२ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च १२३ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च १२४ सख्युर्यः १२६ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् १२८ इति प्रथमः पादः ॥५३९॥

अथ द्वितीयः पादः

तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ २६ तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् ३६ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः ३७ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ३९ किमिदंभ्यां वो घः ४० संख्या अवयवे तयप् ४२ द्वित्रिभ्यां त्रयस्यायज्वा ४३ तस्य पूरणे डट् ४८ नान्तादसंख्यादेर्मट् ४९ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् ५१ द्वेस्तीयः ५४ त्रेः सम्प्रसारणञ्च ५५ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ९४ अत इनिठनौ ११५ वाचो ग्मिनिः १२४ अहं शुभयोर्युस् १४० इति द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः

प्राग्दिशो विभक्तिः १ किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः २ इदम इश् ३ एतेतौ रथोः ४ एतदोऽश् ५ पञ्चम्यास्तसिल् ७ पर्यभिभ्यां च ९ सप्तम्यास्त्रल् १०

इदमो हः ११ किमोऽत् १२ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते १४ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा १५ इदमोर्हिल् १६ दानीं च १८ अनद्यतनेर्हिलन्यतरस्याम् २१ सद्यः परुत्परार्य्यैषमः परेद्यवद्य पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः २२ प्रकारवचने थाल् २३ इदमस्थमुः २४ किमश्च २५ संख्यायाविधार्थे धा ४२ अतिशायनेतमबिष्ठनौ ५५ तिङश्च५६ द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ ५७ अजादी गुणवचनादेव ५८ प्रशस्यस्य श्रः६० ज्य च ६१ वृद्धस्य च ६२ अन्तिक बाढ़योर्नेदमसाधौ ६३ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् विन्मतोर्लुक् ६५ प्रशंसायां रूपप् ६६ ईनसमासौ कल्पब्देश्यदेशीयरः ६७ प्रागिवात्क ७० अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक्टेः ७१ अह्नाते ७३ कुत्सिते ७४ अवक्षेपणे कन् ९५ इवे प्रतिकृतौ ९६ इति तृतीयः पादः ॥५९५॥

अथ चतुर्थः पादः

किमेत्तिङव्ययघानाम्वद्रव्यप्रकर्षे ११ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् १७ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् १८ बहुल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम् ४२ संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ४३ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ४४ अपादाने चाहीयरुहोः ४५ अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विः ५० विभाषा साति कात्स्न्यें ५२ तदधीनवचने च ५४ देये त्रा च ५५ समासान्ताः ६८ बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात् ७३ ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ७४ अच्प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः७५ अदर्णोऽदर्शनात् ७६ अवसमन्धेभ्यस्तमसः ७९ तत् पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्यादेः ८६ अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः ८७ अन्होन्ह एतेभ्यः ८८ राजाहः सखिभ्यष्टच् ९१ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे १०६ अवययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः १०७ अनश्च १०८ ह्नयः

ङ् व्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् ११३ धर्मादनिच् केवलात् १२४ उरःप्रभृतिभ्यः कप १५१ शेषाद्विभाषा १५४ इति पञ्चमाध्याये तुरीय पादः ॥६२५॥

अथ षष्ठाध्याये प्रथमः पादः

एकाचो द्वे प्रथमस्य १ अजादेर्द्वितीयस्य २ पूर्वोऽभ्यासः ४ उभे अभ्यस्तम् ५ जक्षित्यादयः षट् ६ लिटि धातोरनभ्यासस्य ८ सन्यङोः ९ श्लौ १० चङि ११ यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे १३ वचिस्वपियजादीनां किति १५ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च १६ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् १७ न संप्रसारणे सम्प्रसारणम् ३७ आदेच उपदेशेऽशिति ४५ क्रीङ्जीनां णौ ४८ सृजिदृशोर्झल्यमकिति ५८ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् ५९ धात्वादेः षः सः ६४ णो नः ६५ लोपो व्योर्वलि वेरपृक्तस्य ६७ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ६८ एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः ६९ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ७१ संहितायाम् ७२ छे च ७३ इको यणचि ७७ एचोऽयवायावः ७८ एकः पूर्वपरयोः ८४ आद्गुणः ८७ वृद्धिरेचि ८८ आटश्च ९० औतोऽम्शसोः ९३ एङि पररूपम् ९४ उस्यपदान्तात ९६ अतो गुणे ९७ अकः सवर्णे दीर्घः १०१ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः १०२ तस्माच्छसो नः पुंसि १०३ नादिचि १०४ दीर्घाज्जसि च १०५ अमि पूर्वः १०७ सम्प्रसारणाच्च १०८ एङः पदान्तादति १०९ ङसिङसोश्च ११० ऋत उत् १११ ख्यत्यात्प

रस्य ११२ अतोरोरप्लुतादप्लुते ११३ हशिच११४ प्रकृत्याऽन्तःपादमव्यपरे ११५ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् १२५ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि १३२ सुट् कात्पूर्वः १३५ अडभ्यासव्यवायेऽपि १३. सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे १३७ समवायेच १३८ इति प्रथमः पादः ६८२

अथ षष्ठध्याये तृतीयः पादः

अलुगुत्तरपदे १ हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् ९ तत्पुरुषे कृति बहुलम् १४ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे २५ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ३४ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ३५ पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ४२ आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ४६ द्व्यष्टनःसंख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः ४७ त्रेस्त्रयः ४८ इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ६१ खित्यनव्ययस्य ६६ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ६७ नलोपो नञः ७३ तस्मान्नुडचि ७४ सहस्य सः संज्ञायाम् ७८ अव्ययीभावे चाकाले ८१ वोपसर्जनस्य ८२ समानस्य च्छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु ८४ दृग्दृशवतुषु ८९ इदंकिमोरीश्की ९० आ सर्वनाम्नः ९१ पृषोदरादीनियथोपदिष्टम्१०९ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः १११ सहिवहोरोदवर्णस्य ११२ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ११६ विश्वस्यवसुराटोः१२८ मित्रे चर्षौ १३० चौ १३८ सम्प्रसारणस्य १३९ इति तृतीयः पादः १२२

अथ षष्ठाध्याये चतुर्थः पादः

अङ्गस्य १ हलः २ नामि ३ न तिसृचतसृ ४ छन्दस्युभयथा ५ नृचापधायाः ६ सर्वनामस्थाने, चासम्बुद्धौ ८ सान्तमहत संयोगस्य अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृ होतृपोतृप्रशास्तृणाम् ११ इन् हन्पूषार्य्यम्णां शौ १२ सौ च १३ अत्वसन्तस्य चाधातोः १४ अनुनासिकस्य

किझलोः क्ङिति १५ अज्झनगमां सनि १६ तनोतेर्विभाषा १७ असिद्धवदत्राभात् २२ श्नान्नलोपः २३ अनिदितां हलउपधायाः क्ङिति २४ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि २५ रंजेश्च २६ घञि च भावकरणयोः २७ शासइदङ्हलोः ३४ शा हौ ३५ हन्तेर्जः ३६ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादी - नामनुनासिकलोपझलिक्ङितिपो ३७ विड्वनोरनुनासिकस्यात् ४१ जनसनखनां सञ्झलोः ४२ ये विभाषा ४३ तनोतेर्यकि ४४ आर्द्धधातुके ४६ अतो लोपः ४८ यस्य हलः ४९ णेरनिटि ५१ निष्ठायां सेटि५२ अयामन्ताल्वाय्येन्त्विष्णुषु ५५ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च ६२ दीङो युडचि क्ङिति ६३ लोप इटि च ईर्यति ६५ घुमास्थागापाजहातिसां हलि ६६ एर्लिङि ६७ वान्यस्य संयोगादेः ६८ न ल्यपि ६९ लुङ्लङ्लुङ्क्ष्वडुदात्तः ७० आडजादीनाम् ७२ न माङ्योगे ७४ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ७७ अभ्यासस्यासवर्णे ७८ स्त्रियाः ७९ वामशसोः ८० इणो यण् ८१ एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ८२ ओः सुपिः ८३ हुश्नुवोः सार्वधातुके ८७ भुवो वुग्लुङ्लिटोः ८८ ऊदुपधाया गोहः ८९ मितां ह्रस्वः ९२ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि ९८ हुझल्भ्यो हेर्धिः १०१ चिणो लुक् १०४ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्१०६ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः१०७ करोतेः १०८ येच १०९ अत उत् सार्वधातुके ११० श्नसोरल्लोपः १११ श्नाभ्यस्तयोरातः ११२ ई हल्यघोः ११३ इदरिद्रस्य ११४ भियोऽन्यतरस्याम् ११५ जहातेश्च ११६ आ च हौ ११७ लोपो यि ११८ ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च१९ एतआतोएकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि १२० थलि च सेटि १२१ तृफलभजत्रपश्च १२२ वा जृभ्रमुत्रसाम् १२४ न शसददवादिगुणानाम् १२६ भस्य १२५ वसोसंप्रसारण १३१

वाह ऊठ् ॥ १३२ ॥ श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ १३३ ॥ अल्लोपोऽनः ॥१३४॥ विभाषा ङिश्योः ॥ १३६ ॥ न संयोगाद्वमन्तात् ॥ १३७ ॥ अचः ॥ १३८ ॥ उद ईत् ॥ १३९ ॥ आतो धातोः ॥ १४० ॥ तिविंशतेर्डिति ॥ १४२ ॥ टेः ॥ १४३ ॥ नस्तद्धिते ॥ १४४ ॥ अह्नष्टखोरेव ॥ १४५ ॥ ओर्गुणः ॥ १४६ ॥ ढे लोपोऽकद्र्वाः ॥ १४७ ॥ यस्येति च ॥ १४८ ॥ हलस्तद्धितस्य ॥१५०॥ तुरिष्ठेमेयस्सु ॥ १५४ ॥ टेः ॥ १५५ ॥ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥ १५६ ॥ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रपद्राघिवृन्दाः ॥ १५७ ॥ बहोर्लोपो भू च बहोः ॥ १५८ ॥ इष्ठस्य यिट् च ॥ १५९ ॥ ज्यादादीयसः ॥ १६० ॥ र ऋतो हलादेर्लघोः ॥ १६१ ॥ प्रकृत्यैकाच् ॥ १६२ ॥ इनण्यनपत्ये ॥ १६४ ॥ अन् ॥ १६७ ॥ ये चाभावकर्मणोः ॥ १६८ ॥ आत्माध्वानौ खे ॥ १६९ ॥ ब्राह्मोऽजातौ ॥ १७१ ॥ इति षष्ठाध्याये चतुर्थः पादः ॥ ८२१ ॥

अथ सप्तमाध्याये प्रथमः पादः

युवोरनाकौ ॥ १ ॥ प्रत्ययादीनाम् ॥ २ ॥ झोऽन्तः ॥ ३ ॥ अदभ्यस्तात् ॥ ४ ॥ आत्मनेपदेष्वनतः ॥ ५ ॥ शीङो रुट् ॥ ६ ॥ अतो भिस ऐस् ॥ ९ ॥ नेदमदसोरकोः ॥ ११ ॥ टाङसिङसामिनात्स्याः ॥ १२ ॥ ङेर्यः ॥ १३ ॥ सर्वनाम्नः स्मै ॥ १४ ॥ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ॥ १५ ॥ जसः शी ॥ १७ ॥ औङ आपः ॥ १८ ॥ नपुंसकाच्च ॥ १९ ॥ जश्शसोः शिः ॥ २० ॥ अष्टाभ्य औश् ॥ २१ ॥ षड्भ्यो लुक् ॥ २२ ॥ स्वमोर्नपुंसकात् ॥ २३ ॥ अतोऽम् ॥ २४ ॥ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ॥ २५ ॥ युस्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ॥ २७ ॥ ङे प्रथमयोरम् ॥ २८ ॥ शसो न ॥ २९ ॥

भ्यसो भ्यम् ॥ ३० ॥ पञ्चम्या अत् ॥ ३१ ॥ एकवचनस्य च ॥ ३२ ॥ साम आकम् ॥ ३३ ॥ आत औ णलः ॥ ३४ ॥ तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् ॥ ३५ ॥ विदेः शतुर्वसुः ॥३६॥ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥ ३७ ॥ आज्जसेरसुक् ॥ ५० ॥ आमि सर्वनाम्नः सुट् ॥ ५२ ॥ त्रेस्त्रयः ॥ ५३ ॥ ह्रस्वनद्यापो नुट् ॥ ५४ ॥ षट् चतुर्भ्यश्च ॥ ५५ ॥ इदितो नुम् धातोः ॥ ५८ ॥ शे मुचादीनाम् ॥ ५९ ॥ मस्जिनशोर्झलि ॥ ६० ॥ उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ ७० ॥ नपुंसकस्य झलचः ॥ ७२ ॥ इकोऽचि विभक्तौ ॥ ७३ ॥ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य ॥ ७४ ॥ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ ७५ ॥ नाभ्यस्ताच्छतुः ॥७८॥ वा नपुंसकस्य ॥ ७९ ॥ आच्छीनद्योर्नुम् ॥ ८० ॥ श्यप्श्यनोर्नित्यम् ॥ ८१ ॥ सावनडुहः ॥ ८२ ॥ पथिमथ्यृभुक्षामात् इतोऽत् सर्वनामस्थाने ॥ ८६ ॥ थोन्थः ॥ ८७ ॥ भस्य टेर्लोपः ॥ ८८ ॥ पुंसोऽसुङ् ॥ ८९ ॥ गोतो णित् ॥ ९० ॥ णलुत्तमो वा ॥ ९१ ॥ सख्युरसम्बुद्धौ ॥ ९२ ॥ अनङ् सौ ॥ ९३ ॥ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसाञ्च ॥९४ चतुरनडुहोरामुदात्तः ॥ ९८ ॥ अम् संबुद्धौ ॥ ९९ ॥ ऋत इद्धातोः ॥ १०० ॥ उपधायाश्च ॥१०१॥ उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥१०२॥ इति प्रथमः पादः

अथ सप्तमाध्याये द्वितीयः पादः

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ १ ॥ वदव्रजहलन्तस्याचः ॥ ३ ॥ नेटि ॥ ४ ॥ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ॥ ५ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ६ ॥ अतो हलादेर्लघोः ॥ ७ ॥ नेड्वशिकृति ॥ ८ ॥ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ॥ ९ ॥ एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ॥१०॥ श्र्युकः किति॥११॥ सनि ग्रहगुहोश्च ॥ १२ ॥ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ॥ १३ ॥

श्वीदितो निष्ठायाम् ॥ १४ ॥ यस्य विभाषा ॥ १५ ॥ आदितश्च ॥ १६ ॥ आर्धधातुकस्येड् वलादेः ॥ ३५ ॥ ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥ ३७ ॥ वृतो वा ॥ ३८ ॥ न लिङि ॥ ३९ ॥ सिचि च परस्मैपदेषु ॥ ४० ॥ इट् सनि वा ॥ ४१ ॥ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ॥ ४२ ॥ ऋतश्च संयोगादेः ॥ ४३ ॥ स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा ॥ ४४ ॥ रधादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ तीषसहलुभरुषरिषः ॥४८॥ जृव्रश्च्योः क्त्वि ॥ ५५ ॥ उदितो वा ॥ ५३ ॥ सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः ॥ ५७ ॥ गमेरिट् परस्मैपदेषु ॥ ५८ ॥ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ॥ ५९ ॥ तासि च क्लृपः ॥ ६० ॥ अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् ॥ ६१ ॥ उपदेशेऽत्वतः ॥ ६२ ॥ ऋतो भारद्वाजस्य ॥ ६३ ॥ विभाषासृजिदृशोः ॥ ६५ ॥ इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् ॥७०॥ ऋद्धनोः स्ये ॥७०॥ अञ्जेः सिचि ॥ ७१ ॥ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु ॥ ७२ ॥ यमरमनमातां सक् च ॥ ७३ ॥ रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ ७६ ॥ ईशः से ॥ ७७ ॥ ईडजनोर्ध्वे च ॥ ७८ ॥ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ॥ ७९ ॥ अतो येयः ॥ ८० ॥ आतो ङितः ॥ ८१ ॥ आने मुक् ॥ ८२ ॥ ईदासः ॥ ८३ ॥ अष्टन आ विभक्तौ ॥ ८४ ॥ रायो हलि ॥ ८५ ॥ युष्मदस्मदोरनादेशे ॥ ८६ ॥ द्वितीयायाञ्च ॥८७॥ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ॥ ८८ ॥ योऽचि ॥ ८९ ॥ शेषे लोपः ॥ ९० ॥ मपर्यन्तस्य ॥ ९१ ॥ युवावौ द्विवचने ॥ ९२ यूयवयौ जसि ॥ ९३ ॥ त्वाहौ सौ ॥ ९४ ॥ तुभ्यमह्यौ ङयि ॥९५॥ तवममौ ङसि ॥ ९६ ॥ त्वमावेकवचने ॥ ९७ ॥ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ॥ ९८ ॥ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥ ९९ ॥ अचि र ऋतः ॥ १०० ॥ त्यदादीनामः ॥ १०२ ॥ किमः कः ॥ १०३ ॥ कु तिहोः ॥१०४॥ क्वाति॥१०५॥तदोः सः

सावनन्त्ययोः ॥ १०६ ॥ अदस औ सुलोपश्च ॥१०७॥ इदमो मः ॥ १०८ ॥ दश्च ॥ १०९ ॥ यः सौ ॥ ११० ॥ इदोऽय् पुंसि ॥ १११ ॥ अनाप्यकः ॥ ११२ ॥ हलि लोपः ॥ ११३ ॥ मृजेर्वृद्धिः ॥ ११४ ॥ अचोञ्णिति ॥११५॥ अत उपधायाः ॥ ११६ ॥ तद्धितेष्वचामादेः ॥ ११७ ॥ किति च ॥ ११८ ॥ इति द्वितीयः पादः ॥ ९६३ ॥

अथ सप्तमाध्याये तृतीयः पादः

न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ॥ ३ ॥ द्वारादीनां च ॥ ४ ॥ उत्तरपदस्य ॥१०॥ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ॥ १९ ॥ अनुशतिकादीनाञ्च ॥२०॥ हनस्तोऽचिण्णलोः ।३२। आतोयुक् चिण्कृतोः ॥३३॥ नोदात्तोपदेशस्यमान्तस्यानाचमेः।३४। जनिवध्योश्च ॥३५॥ अर्त्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ ॥३६॥ भियोहेतुभये षुक् ॥ ४०॥ प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ॥ ४४ ॥ ठस्येकः ॥५०॥ इसुसुक्तान्तात्कः ॥५१॥ चजोः कु घिण्यतोः ॥५२॥ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ ५४ ॥ अभ्यासाच्च ॥५५॥ सन्लिटोर्जेः ॥५७॥ विभाषा चेः ॥५८ घोर्लोपो लेटि वा ॥७०॥ ओतः श्यनि ॥७१॥ क्सस्याचि ॥७२॥ लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ॥७३॥ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ७४॥ ष्ठिवुक्लम्याचमां शिति ॥७५ क्रमः परस्मैपदेषु ॥७६॥ इषुगमियमां छः ॥७७॥ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ॥७८॥ ज्ञाजनोर्जा ॥७९॥ प्वादीनां ह्रस्वः ॥८०॥ मिदेर्गुणः ॥८२॥ जुसि च ॥८३॥ सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥८४॥ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ॥८५॥ पुगन्तलघूपधस्य च ॥८६॥ नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके ॥८७॥ भूसुवोस्तिङि ॥८८॥ उतो वृद्धिर्लुकि हलि

॥८६॥ ब्रुव ईट् ॥९३॥ यङो वा ॥९४॥ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ॥९५॥ अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥९६॥ रुदश्च पञ्चभ्यः ॥९८॥ अड् गार्ग्यगालवयोः ॥९९॥ अदः सर्वेषाम् ॥१००॥ अतो दीर्घो यञि ॥ ०१॥ सुपि च ॥१०२॥ बहुवचने झल्येत् १०३ ओसि च ॥१०४॥ आङि चापः ॥१०५॥ सम्बुद्धौ च ॥१०६॥ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥०७॥ ह्रस्वस्य गुणः ॥१०८॥ जसि च ॥१०९॥ ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ॥११०॥ घेर्ङिति ॥१ १॥ आण्नद्याः ॥११२॥ याडापः ॥११३॥ सर्वनाम्नः स्याड् ह्रस्वश्च ।११४। ङेराम्नद्यामीभ्यः ।११६। इदुद्भ्याम् ॥११७॥ औत् ॥११८ अच्च घेः ॥११९॥ आङो नाऽस्त्रियाम् ॥१२०॥ इति तृतीयः पादः

अथ चतुर्थः पादः

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥१॥ नाग्लोपिशास्वृदिताम् ॥२॥ तिष्ठतेरित् ॥५॥ उर्ऋत् ॥७॥ दयतेर्दिगि लिटि ॥९॥ ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ॥१०॥ ऋच्छत्यृताम् ॥११॥ शृदृप्रां ह्रस्वो वा ॥१२॥ केऽणः ॥१३॥ न कपि ॥१४॥ ऋदृशोऽङि गुणः ॥१६॥ अस्यतेस्तुक् ॥१७॥ श्वयतेरः ॥१८॥ पतः पुम् ॥१९॥ वच उम् ।२०। शीङः सार्वधातुके गुणः ॥२१॥ अयङ् यि ङिति ॥२२॥ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥२५॥ च्वौ च ॥२६॥ रीङ् ऋतः ॥२७॥ रिङ् शयग् लिङ्क्षु ॥२८॥ गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥२९॥ यङि च ॥३०॥ ई घ्राध्मोः ॥३१॥ अस्य च्वौ ॥३२॥ क्यचि च ॥३३॥ यति स्यतिमास्थामित्ति किति ॥४० दधातेर्हिः ॥४२॥ जहातेश्च क्त्वि ॥४३॥ दो दद् घोः ॥४६॥ अचउपसर्गात्तः ॥४७॥ अपो भि ॥४८॥ सः स्यार्धधातुके ॥४९॥ तासस्त्योर्लोपः ॥५०॥ रि च ॥५१॥ ह एति ॥५२॥ सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥५४॥ आप्ज्ञाप्यृधामीत् ॥५५॥ अत्र लोपोऽभ्यासस्य

॥५८॥ ह्रस्वः ॥५९॥ हलादिः शेषः ॥६०॥ शर्पूर्वाः खयः ॥६१ कुहोश्चुः ॥६२॥ उरत् ॥६६॥ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्॥६७॥ व्यथो लिटि ॥६८॥ दीर्घ इणः किति ॥६९॥ अत आदेः ॥७०॥ तस्मान्नुड् द्विहलः ॥७१॥ अश्नोतेश्च ॥७२॥ भवतेरः ॥७३॥ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ ॥७५॥ भृञामित् ॥७६॥ अतिपिपर्त्योश्च ॥७७॥ सन्यतः ॥७९॥ ओः पुयण्ज्यपरे ॥८०॥ स्रवतिश्रृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनांवा ॥८१॥ गुणो यङ्लुकोः ॥८२॥ दीर्घोऽकितः ॥८३॥ रीगृदुपधस्य च ॥९०॥ रुग्रिकौ च लुकि ॥९१॥ ऋतश्च ॥९२॥ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥९३॥ दीर्घो लघोः ॥९४॥ ईच गणः ॥५॥ इति सप्तमाध्याये चतुर्थः पादः ॥१०८४॥

———

अथ अष्टमाध्याय प्रथमः पादः

सर्वस्य द्वे ॥१॥ तस्यपरमाम्रेडितम्॥२ नित्यवीप्सयोः ॥ ४ ॥ पदस्य ॥१६॥ पदात् ॥१७॥ अनुदात्तं सर्वमपादादौ ॥१८॥ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥२०॥ बहुवचनस्य वस्नसौ ॥२१॥ तेमयावेकवचनस्य ॥२२॥ त्वामौ द्वितीयायाः ॥२३॥ न च वाहाहैवयुक्ते ॥२४॥ इति प्रथमः पादः ॥१०९४॥

अथ द्वितीयः पादः

पूर्वत्रासिद्धम् ॥१॥ नलोपः सुप् स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ॥२॥ न मुने ॥३॥ न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥७॥ न ङिसम्बुद्ध्योः ।८।मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥९॥ झयः ॥१०॥ कुपो रो लः ॥१८॥ उपसर्गस्यायतौ ॥९॥ संयोगान्तस्य लोपः ॥२३॥ रात्सस्य ॥२४॥ धि च ॥२५॥ झलो झलि ॥२६॥ ह्रस्वा-

दङ्गात् ॥२७॥ इट ईटि ॥२८॥ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥२९॥ चोः कुः ॥३०॥ हो ढः ॥३१॥ दादेर्धातोर्घः ॥३२॥ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ॥३३॥ नहो धः॥३४॥ आहस्थः ॥३५॥ ब्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥३६॥ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ॥३७॥ दधस्तथोश्च ॥३८॥ झलां जशोऽन्ते ॥३९॥ झषस्तथोर्धोऽधः ॥४०॥ षढोः कः सि ॥४१॥ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥४२॥ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ॥४३॥ ल्वादिभ्यः ॥४४॥ ओदितश्च ॥४५॥ शुषः कः ॥५१॥ पचो वः ॥५२॥ क्षायो मः ॥५३॥ क्किन्प्रत्ययस्य कुः ॥६२॥ मोनोधातोः ॥६४॥ म्वोश्च ॥६५॥ ससजुषो रुः ॥ ६६ ॥ अहन् ॥ ६८ ॥ रोऽसुपि ॥ ६९ ॥ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ॥ ७२ ॥ तिप्यनस्तेः ॥ ७३ ॥ सिपि धातो रुर्वा ॥ ७४ दश्च ॥ ७५ ॥ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ॥ ७६ ॥ हलि च ॥ ७७ ॥ उपधायाश्च ॥ ७८ ॥ न भकुर्छुराम् ॥७९॥ अदसोऽसेर्दादुदो मः ॥ ८० ॥ एत ईद् बहुवचने ॥ ८१ ॥

इति द्वितीयःपादः ॥ ११४३ ॥

अथ तृतीयः पादः

❀ मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि ॥ १ ॥ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ॥ २ ॥ समः सुटि ॥ ५ ॥ पुमः खय्यम्परे ॥ ६ ॥ नश्छव्यप्रशान् ॥ ७ ॥ ढो ढे लोपः ॥ १३ ॥ रो रि ॥ १४ ॥ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ १५ ॥ रोः सुपि ॥ १६ ॥ भो भगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ १७ ॥ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ॥ १८ ॥ लोपः शाकल्यस्य ॥ १९ ॥ हलि सर्वेषाम् ॥ २२ ॥ मोऽनुस्वारः ॥२३॥ नश्चापदान्तस्य झलि ॥ २४ ॥ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ॥२२॥ विसर्जनीयस्य सः ॥ ३४ ॥

कुप्वो: क: पौच ।३७। अपादान्तस्य मूर्धन्य: ।५५। सहे: साढ: स: ।५६। इण्को: ।५७। नुम्विसर्जनीयशव्यवायेऽपि ।५८। अ देशप्रत्यययो: शासिवसिघसीनाञ्च ।६०। इण: षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् ।७८। विभाषेटः ।७९। इति तृतीयः पादः ।११६८।

अथ चतुर्थः पादः

रषाभ्यां नो णः समानपदे ।१। अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य ।१४। स्तोः श्चुना श्चुः ।४०। ष्टुना ष्टुः ।४१। यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ।४५। झलां जश् झशि ।५३। अभ्यासे चर्च ।५४। खरि च ।५५। वाऽवसाने ।५६। अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः वा पदान्तस्य ।५९। तोर्लि ॥६०॥ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥६१॥ झयो होऽन्यतरस्याम् ।६२। शश्छोऽटि ।६३। हलो यमां यमि लोपः ।.४। झरो झरि सवर्णे ।६५। अ अ इति ।६८। इत्यष्टमाध्याये चतुर्थः पादः ।११८७।

———

अधीत्य बालाः सुधियो भवेयुः स्वल्पप्रयासादृजुपद्धतेश्च ।
अस्तं व्रजेद् व्याकृतिभीतिलेशः प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥

———

इति श्रीविहारप्रान्तीयसारण्यमण्डलस्थजगन्नाथपुराभिजनेन
काशीवास्तव्येन महामहाध्यापकेन पण्डितराज-
श्रीगोपालशास्त्रिणा दर्शनकेशरिणा
क्षैमधरिणा रचिता
संक्षिप्ताष्टाध्यायी
समाप्ता ।

भारतीय संस्कृति संरक्षक शास्त्रिमण्डलकी अमूल्य पुस्तकें—

(१)	धर्मोपदेशिका	III)
(२)	हिन्दीदीपिका	१)
(३)	संक्षिप्तहितोपदेश	II)
(४)	संस्कृतशिक्षक	१।)
(५)	भारतीयसंस्कृति	१)
(६)	ऋजुपाणिनीयम्	II)
(७)	मीमांसापरिभाषा	III)
(८)	पाणिनीयप्रबोध प्रथम भाग	१)
(९)	,, ,, द्वितीय भाग	१)
(१०)	कथा-मञ्जरी (हिन्दी	१II)
(११)	वाणी निबन्धमणिमाला (संस्कृतम्)	III)
(१२)	वज्रपातः (संस्कृत जीवनकाव्य)	II=)
(१३)	संस्कृतम् (प्रथमं शतकम्),	II)
	संस्कृतम् (द्वितीयं शतकम्	II)
(१४)	स्वातन्त्र्य सन्देशः-(संस्कृतम्)	I=)
(१५)	संस्कृत पत्रावली	II=)
(१६)	वेंकटेश्वरतारावली (लघुस्तोत्र पुस्तकम्)	=)
(१७)	तर्कसंग्रह (हिन्दीके साथ)	I)

प्राप्तिस्थानः—

व्यवस्थापक, शास्त्रिमण्डल,

डी. ५९।३१ गार्डन कालोनी, सिगरा, बनारस १